

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the 'Committee on Publication Ethics'

Online ISSN:2584-184X



Research Article

ऋग्वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

श्री रितेश कुमार नायक

सहायक प्राध्यापक, इतिहास, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई, दुर्ग छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author: * श्री रितेश कुमार नायक

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23364984>

सारांश

भारतीय सभ्यता व संस्कृति के विकास में वैदिक काल का विशेष महत्व है। वैदिक काल को सामान्यतः दो भागों - ऋग्वैदिक काल तथा उत्तर वैदिक कालक्रम में विभाजित किया जाता है। इन दोनों ही कालों में महिलाओं की सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक तथा आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलता है। जहां एक ओर ऋग्वैदिक काल में महिलाओं को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता, सम्मान तथा समान अधिकार प्राप्त थे, जबकि उत्तर वैदिक काल में उनकी स्थिति में क्रमशः गिरावट आने लगी। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य इन दोनों कालों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में शिक्षा, विवाह, संपत्ति अधिकार, धार्मिक सहभागिता, राजनीतिक भूमिका तथा सामाजिक सम्मान जैसे प्रमुख आयामों का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि समय व सभ्यता के परिवर्तन के साथ सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिवर्तनों के कारण महिलाओं की स्वतंत्रता एवं अधिकारों में महत्वपूर्ण हुए।

Manuscript Information

- ISSN No: 2584-184X
- Received: 11-09-2026
- Accepted: 04-10-2026
- Published: 14-10-2026
- MRR:4(10); 2026: 108-110
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

नायक रि कु, ऋग्वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(10):108-110.

Access this Article Online



www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: ऋग्वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल, महिला, सामाजिक स्थिति, शिक्षा, विवाह, संपादित अधिकार।

1. प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में वैदिक काल को संस्कृति एवं सभ्यता का स्वर्णिम युग माना जाता है। क्योंकि इस काल में समाज, धर्म, शिक्षा तथा राजनीति का व्यापक विकास हुआ। इस रूप में महिलाओं की स्थिति किसी भी समाज की प्रगति का महत्वपूर्ण सूचक होती है। वैदिक साहित्य से ज्ञात होता है कि प्रारंभिक वैदिक समाज में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वे धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती थीं, शिक्षा ग्रहण करती थीं तथा सामाजिक, धार्मिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाती थीं।

किन्तु उत्तर वैदिक काल में सामाजिक संरचना अधिक जटिल होती गई। वर्ण व्यवस्था कठोर हुई, धार्मिक कर्मकांडों में वृद्धि हुई तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था अधिक प्रभावी बन गई। इन परिवर्तनों का प्रतिकूल प्रभाव महिलाओं की सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक सभी स्थिति पर पड़ा।

2. अध्ययन के उद्देश्य

ऋग्वैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना। उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करना। दोनों कालों में महिलाओं की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना। महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन के कारणों का विश्लेषण करना।

3. शोध पद्धति

यह शोध-पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। अध्ययन के लिए ऋग्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद, इतिहास संबंधी पुस्तकों तथा शोध-लेखों का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति अपनाई गई है।

ऋग्वैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति

1. शिक्षा का अधिकार

ऋग्वैदिक काल में महिलाओं को पुरुषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का अवसर उपलब्ध था। वे वेदों का अध्ययन करती थीं तथा धार्मिक एवं दार्शनिक चर्चाओं में भाग लेती थीं। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, घोषा तथा अपाला जैसी विदुषी महिलाओं का उल्लेख ऋग्वेद एवं उपनिषदों में मिलता है।

इस समय दो प्रकार की छात्राओं का वर्णन मिलता हैकृ

1. ब्रह्मवादिनी - जो आजीवन शिक्षा प्राप्त करती थीं।
2. सद्योवधू - जो विवाह तक शिक्षा ग्रहण करती थीं।

2. धार्मिक स्थिति

महिलाएँ यज्ञ, हवन तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में पति के साथ समान रूप से भाग लेती थीं। पत्नी के बिना यज्ञ को अपूर्ण माना जाता था। अनेक ऋचाओं की रचना महिलाओं द्वारा की गई, जिससे उनकी धार्मिक एवं बौद्धिक प्रतिष्ठा स्पष्ट होती है।

3. विवाह व्यवस्था

ऋग्वैदिक काल में विवाह की आयु अपेक्षाकृत अधिक थी। बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। महिलाओं को योग्य वर चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त थी। स्वयंवर जैसी परंपराएँ भी विद्यमान थीं।

विधवा विवाह तथा पुनर्विवाह को भी सामाजिक स्वीकृति प्राप्त थी।

4. पारिवारिक स्थिति

परिवार में महिला को गृहस्वामिनी एवं सहधर्मिणी का स्थान प्राप्त था। पति-पत्नी के संबंध सहयोग एवं समानता पर आधारित थे। पत्नी को परिवार की महत्वपूर्ण सदस्य माना जाता था।

5. आर्थिक स्थिति

महिलाएँ पशुपालन, कृषि तथा घरेलू उद्योगों में योगदान देती थीं। उन्हें स्त्रीधनश् प्राप्त होता था। यद्यपि संपत्ति का पूर्ण अधिकार सीमित था, फिर भी आर्थिक सम्मान प्राप्त था।

6. राजनीतिक स्थिति

प्रत्यक्ष राजनीतिक भागीदारी सीमित होने पर भी महिलाओं का सामाजिक निर्णयों में प्रभाव था। कुछ विदुषी महिलाएँ सभाओं एवं वैचारिक विमर्शों में भाग लेती थीं।

उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति

उत्तर वैदिक काल (लगभग 1000 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व) में समाज में अनेक परिवर्तन हुए जिनका महिलाओं की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

1. शिक्षा में गिरावट

महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध लगने लगे। उपनयन संस्कार धीरे-धीरे समाप्त हो गया। वेद अध्ययन का अधिकार सीमित हो गया। गार्गी एवं मैत्रेयी जैसी विदुषियों का उल्लेख मिलता है, किन्तु ऐसी महिलाओं की संख्या बहुत कम रह गई।

2. धार्मिक स्थिति

महिलाओं की धार्मिक स्वतंत्रता में कमी आई। धार्मिक अनुष्ठानों में उनकी भूमिका गौण होती गई। यज्ञों में उनकी भागीदारी सीमित कर दी गई।

3. विवाह व्यवस्था

इस काल में बाल विवाह का प्रारंभिक स्वरूप विकसित होने लगा। विवाह में महिलाओं की सहमति का महत्व कम हो गया। बहुविवाह का प्रचलन बढ़ा तथा विधवा विवाह को सामाजिक स्वीकृति कम मिलने लगी।

4. पारिवारिक स्थिति

संयुक्त परिवारों का विस्तार हुआ तथा परिवार में पुरुष का प्रभुत्व बढ़ गया। महिलाओं की भूमिका मुख्यतः गृहकार्य एवं संतान पालन तक सीमित होने लगी।

5. आर्थिक स्थिति

महिलाओं के संपत्ति अधिकार सीमित होते गए। स्त्रीधन की व्यवस्था बनी रही, किन्तु उत्तराधिकार के अधिकारों में कमी आई। आर्थिक निर्णयों में उनकी भागीदारी कम हो गई।

6. सामाजिक स्थिति

महिलाओं की स्वतंत्रता में गिरावट आई। पुत्र जन्म को अधिक महत्व मिलने लगा। सामाजिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी सीमित हो गई।

ऋग्वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल का तुलनात्मक अध्ययन

आधार	ऋग्वैदिक	उत्तर वैदिक
शिक्षा	समान अवसर	अवसर सीमित
उपनयन	प्रचलित	लगभग समाप्त
वेद अध्ययन	अधिकार प्राप्त	प्रतिबंधित
विवाह	स्वयंवर, वयस्क विवाह	बाल विवाह की शुरुआत, सामाजिक नियंत्रण
विधवा विवाह	स्वीकृत	सीमित
धार्मिक अधिकार	पूर्ण सहभागिता	सीमित सहभागिता
संपत्ति अधिकार	अपेक्षाकृत बेहतर	सीमित
सामाजिक सम्मान	उच्च	गिरावट
पारिवारिक स्थिति	सहधर्मिणी	आश्रित भूमिका

महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन के कारण:

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में गिरावट के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे। वर्ण व्यवस्था का कठोर होना - समाज में जातीय विभाजन बढ़ने से महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित हुई।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विकास - परिवार एवं समाज में पुरुष प्रधानता बढ़ी।

धार्मिक कर्मकांडों की वृद्धि - पुरोहित वर्ग के प्रभाव से महिलाओं की धार्मिक भूमिका कम हुई।

संपत्ति की अवधारणा में परिवर्तन - निजी संपत्ति एवं उत्तर अधिकार व्यवस्था के कारण महिलाओं के अधिकार सीमित हुए। राजनीतिक अस्थिरता एवं सुरक्षा संबंधी चिंताएँ - महिलाओं की सार्वजनिक गतिविधियों पर प्रतिबंध बढ़े।

आलोचनात्मक विश्लेषण

यद्यपि सामान्य रूप से यह माना जाता है कि ऋग्वैदिक काल महिलाओं के लिए अधिक अनुकूल था, फिर भी उस समय पूर्ण लैंगिक समानता स्थापित नहीं थी। समाज में पुरुष नेतृत्व प्रमुख था। दूसरी ओर, उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट के बावजूद कुछ शिक्षित एवं विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है, जो यह दर्शाता है कि परिवर्तन सभी वर्गों में समान रूप से नहीं हुआ। महिलाओं की स्थिति का परिवर्तन केवल धार्मिक कारणों से नहीं, बल्कि आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक परिवर्तनों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम था।

7. निष्कर्ष

ऋग्वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा, धर्म, विवाह तथा सामाजिक जीवन में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वे पुरुषों के साथ समान रूप से सामाजिक गतिविधियों में भाग लेती थीं। उत्तर वैदिक काल में समाज के जटिल होने, वर्ण व्यवस्था के कठोर होने तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था के सुदृढ़ होने से महिलाओं की स्थिति में क्रमिक गिरावट

आई। शिक्षा, धार्मिक अधिकार, संपत्ति अधिकार तथा सामाजिक स्वतंत्रता सीमित होती गई।

अतः यह कहा जा सकता है कि ऋग्वैदिक काल महिलाओं के लिए अपेक्षाकृत अधिक प्रगतिशील था, जबकि उत्तर वैदिक काल में उनकी सामाजिक स्थिति में अवनति देखी गई। यह अध्ययन वर्तमान समाज के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तिकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने में सहायता करता है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा आरएस. प्राचीन भारत का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2007।
2. झा; श्रीमाली. प्राचीन भारत का इतिहास. 2016।
3. अल्लेकर एस. हिंदू सभ्यता में महिलाओं की स्थिति. 1956।
4. थापर आर. प्राचीन भारत का इतिहास. 2002।
5. ऋग्वेद. सायण भाष्य सहित। विभिन्न संस्करण।
6. अथर्ववेद. विभिन्न संस्करण।
7. शतपथ ब्राह्मण. विभिन्न संस्करण।
8. बृहदारण्यक उपनिषद्. विभिन्न संस्करण।

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution-Non-commercial-No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Corresponding Author



श्री रितेश कुमार नायक इतिहास विषय के सहायक प्राध्यापक हैं। वे शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत में कार्यरत हैं। उनकी शैक्षणिक रुचि इतिहास के अध्ययन, ऐतिहासिक घटनाओं के विश्लेषण तथा भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत के शोध और अध्ययन में है।